# कविग्राम

वर्ष 2, अंक 9, सितम्बर 2021

*हिन्दी दिवस विशेष*

# हिन्दी उत्तरदायित्व अथवा आवश्यकता

# कविग्राम

वर्ष 2, अंक 9, सितम्बर 2021

**परामर्श मण्डल**
सुरेन्द्र शर्मा
अरुण जैमिनी
विनीत चौहान

**सम्पादक**
चिराग़ जैन

**सह सम्पादक**
मनीषा शुक्ला

**कला सम्पादक**
प्रवीण अग्रहरि

**प्रकाशन स्थल**
नई दिल्ली

**प्रकाशक**
कविग्राम

उपरोक्त सभी पद मानद तथा अवैतनिक हैं।

**मूल्य**
निःशुल्क


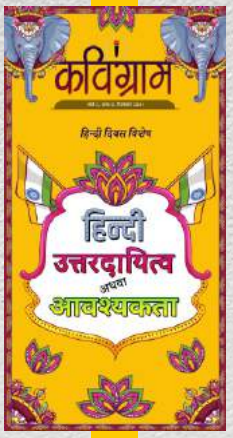


आवरण सज्जा : प्रवीण अग्रहरि

## सम्पर्क


TheKavigram@gmail.com

8090904560

facebook.com/kavigram

kavigramparivar

youtube.com/c/KaviGram

kavigram.com


सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर कविग्राम से जुड़ने के लिये इन आइकॉन्स को स्पर्श करें।

# भीतर के पृष्ठों पर...


सम्पादकीय / चिराग़ जैन 04

आवरण कथा :—

हिन्दी : उत्तदायित्व या आवश्यकता / चिराग़ जैन 05

बहुत कठिन है डगर पनघट की / राजेन्द्र प्रसाद 09

सिक्किम में हिन्दी / प्रीति केसरवानी 12

कविता राधिका राधिका / उत्कर्ष अग्निहोत्री 13

कवि कुनबा कलैण्डर सितम्बर 14

वटवृक्ष निज भाषा उन्नति / भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 16

गुलमोहर जय हिंदी जय भारती / त्रिलोक सिंह ठकुरेला 17

फुलवारी हिन्दी का गुणगान / गोपाल पाण्डेय 18

ग़ालिब की गली लौट आएंगे / गोविन्द आर्य निशात 19

ग़ालिब की गली सत्य एकमात्र है / आलोक श्रीवास्तव 20

विनोद हिन्दी माता / काका हाथरसी 21

उत्साह चन्दन और अबीर / सोम ठाकुर 22

लोक लालित्य हमारो रसिया / रमेश रमन 23

कवि सम्मेलन संग्रहालय 24

धारदार हिंदी साहित्य में वाडा क़ानून / अरविंद तिवारी 25

सार्थक पहल बात निकलेगी तो फिर दूर तलक जाएगी 28

एकांकी हिन्दी हैं हम / पॉपुलर मेरठी 29

कवि सम्मेलन समाचार 33

कचपन इन्तज़ार ख़त्म हुआ / चिराग़ जैन 35

श्रद्धांजलि श्री प्रकाश प्रलय 37

# सम्पादकीय

भाषा मनुष्य के व्यक्तित्व का पहला विज्ञापन है। हमारी भाषा, हमारा उच्चारण, हमारा शब्द चयन, हमारी शैली तथा हमारा भाषाई मुहावरा हमारे संवाद को महत्वपूर्ण तथा महत्वहीन बनाने में सबसे बड़ी भूमिका निर्वाह करता है। 'क्या कहना है' से अधिक ध्यान यदि 'कैसे कहना है' पर दिया जाए तो कमज़ोर बात भी प्रभावी सिद्ध होती है। आप जो भाषा बोलते हैं, उसके परिमार्जन तथा सौष्ठव के प्रति गाम्भीर्य आपको स्वयं तो सुख देता ही है, सुननेवाले को भी मन्त्रमुग्ध कर देता है। परिमार्जन का तात्पर्य भाषा के गूढ़ होने से बिल्कुल नहीं है।

भाषाई कट्टरता की स्थिति भी ठीक वैसी ही है जैसी धार्मिक कट्टरता की है। जिन भाषाओं ने अपनी बाँहें फैलाकर नये शब्दों का तथा नयी तकनीक का स्वागत नहीं किया, वह अपने स्थान पर ही खड़ी-खड़ी जड़ हो गयीं। जिस भाषा ने अपने परिवेश के आसपास की दूसरी भाषाओं से वैर किया, वे अपने दायरे में सिमटकर एकाकी हो गयीं। जिन भाषाओं ने समय के साथ अपने आचरण में परिवर्तन स्वीकार न किया वे भीतर ही भीतर सड़ने लगीं।

हिन्दी की स्थिति ऐसी न तो है, न ही होनी चाहिए। इसके समाज में भी गाहे-बगाहे इसके संस्कृतनिष्ठ बने रहने अथवा इसके जटिल बने रहने के प्रयास किये जाते हैं, किन्तु वह जटिलता हिन्दी की प्रवृत्ति को सूट नहीं करती। सरकारी विभागों में तैनात जिन अनुवादकों ने इस प्रकार के प्रयासों में महती भूमिका निभाई है, उनके समस्त प्रयास उनकी क्षमताओं के समान ही उनकी टेबल से आगे न बढ़ सके।

सितम्बर महीना हिन्दी के गुणगान का महीना है। यह राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन सरीखे हिन्दी के सपूतों को नमन करने का महीना है। यह मदन मोहन मालवीय सरीखे हिन्दी साधकों को प्रणाम करने का महीना है। हिन्दी के हस्ताक्षरों को श्रद्धांजलि देने का सर्वश्रेष्ठ तरीका है कि आप स्वयम् हिन्दी के हस्ताक्षर बन जाओ। यदि सृजन क्षमता की कमी के कारण स्वयम् हिन्दी के हस्ताक्षर न भी बन सको तो कम से कम अपने हस्ताक्षर तो हिन्दी में करना प्रारम्भ कर ही दो।

# हिन्दी : उत्तरदायित्व या आवश्यकता

हम भारतीय विरोधाभासी इच्छाओं के कारण अपने लिए मुसीबत खड़ी करते हैं। राजनीति से लेकर नित्य व्यवहार तक इस प्रवृत्ति के कारण हम स्वयं ही अपनी समस्या को गूढ़ करते रहते हैं और अंततः उस बिन्दु पर पहुँच जाते हैं, जहाँ हम स्वयं इस बात से अनभिज्ञ हों कि हमें चाहिए क्या!

भाषा के विषय में भी हम इसी प्रवृत्ति के कारण उलझते जा रहे हैं। एक ओर हम 'कोस-कोस पर बदले बानी' कहकर इतराते हैं और दूसरी ओर उर्दू के एक शब्द से भाषा के अस्तित्व पर संकट महसूस करने लगते हैं। एक ओर हम हिन्दी को इतना सुदृढ़ बताते हैं कि वह भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त विदेशी भाषाओं के शब्द भी सरलता से अपने शब्दकोश में मिला सकती है; और दूसरी ओर हम हिन्दी को संस्कृतनिष्ठ बनाए रखने की वकालत करते हैं।

भारत विविध संस्कृतियों का देश है। द्रविड़ भाषा परिवार की भाषाओं को छोड़ भी दें तो भी आर्य भाषा परिवार में ही क़ाफ़ी विविधता दिखायी देती है। अकेली हिन्दी में ही दर्जनों बोलियाँ और शैलियाँ देखने को मिलती हैं। इस वैविध्यपूर्ण सौन्दर्य को हम एकरूप करने पर क्यों तुले हैं, यह मुझे समझ नहीं आता।

मैं इस कल्पना से भी सिहर उठता हूँ कि हम एक ऐसी हिन्दी बोल रहे हों जिसमें लोकभाषा का लालित्य न हो, जिसमें मारवाड़ी, ब्रज, अवधी, भोजपुरी, बुन्देली और कन्नौजी के मीठे मुहावरे न हों।

हाँ, वर्तनी की एकरूपता के लिए किए जा रहे प्रयास अवश्य स्तुत्य हैं। व्याकरण के नियमों को लेकर बरती जाने वाली सावधानी का मैं समर्थक हूँ। क्योंकि व्याकरण भाषा की त्वचा होती है। यह भाषा के सौन्दर्य का आधार है। व्याकरण भाषा की पहचान है।

यदि हमने व्याकरण को साध लिया, यदि हम व्याकरण की आत्मा को बचा ले गये तो दुनिया की किसी भी भाषा का शब्द उस व्याकरण के दायरे में आकर स्वयं को हिन्दी से विलग न कर सकेगा। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि कैंची जैसा शब्द हिन्दी भाषा में आयातित शब्द है। हिन्दी में इस भाव के लिए 'कतरनी' शब्द उपलब्ध है। लेकिन कैंची का उच्चारण करते समय आपको कभी परायापन महसूस न हुआ होगा। जैसे महसूस शब्द लिखते हुए मैंने किसी अजनबी एहसास की अनुभूति नहीं की।

भाषा को लेकर हमारी पहली चिन्ता यही होनी चाहिए कि हमारी पीढ़ियाँ इसके व्याकरण को तोड़-मरोड़ कर स्वयं को आधुनिक सिद्ध करने न निकल पड़ें। भाषा को लेकर हमारी दूसरी चिन्ता यह होनी चाहिए कि मोबाइल के चलन से देवनागरी का लोप न हो जाए। रोमन लिपि में लिखी गयी हिन्दी देखकर हमें सावधान होना चाहिए। लिपि का लोप किसी भाषा के पतन की सूचना होती है। देवनागरी के प्रयोग में कमी आए, तो हमें चिन्तित होना चाहिए। यदि कोई शब्द देवनागरी के आकार में ढलने को तैयार हो तो हमें हिन्दी जैसा बड़ा दिल रखकर उसे स्वीकार करना चाहिए।

हमें हिन्दी की प्रयोजनमूलकता में आई कमी पर विचार करना चाहिए। हमें हिन्दी की रोज़गारपरकता पर विचार करना चाहिए। अंग्रेजी के अख़बार ज़्यादा क्यों बिक रहे हैं —इस प्रश्न पर माथा पकड़ कर बैठने की बजाय हमें इस बात पर अन्वेषण करना होगा कि हिन्दी की पत्रकारिता में कहाँ चूक हो रही है!

हम दशकों से हिन्दी को इस देश के नागरिकों का उत्तरदायित्व बनाने पर तुले हैं, जबकि आवश्यक यह है कि हिन्दी को इस देश के नागरिकों की आवश्यकता बनाया जाए। हम अंग्रेजी को कोसने में इतने व्यस्त रहे कि हिन्दी के सद्गुणों पर चर्चा ही न कर सके। हम स्वयं अंग्रेजी बोलने में दक्ष न हुए तो हमने अपनी सन्तति को इस कुण्ठाबोध से भरना शुरू कर दिया कि यदि अंग्रेजी न बोल पाए तो पिछड़ जाओगे। हम अपनी सन्तान को यह बात बताना ही भूल गए कि इस देश में रहकर हिन्दी न बोल पाए तो भोजन-पानी भी न जुटा सकोगे। हमने फ्ल्यूएन्ट अंग्रेजी बोलने पर अपने नौनिहाल की पीठ थपथपाई किन्तु फर्राटेदार हिन्दी बोलने पर उसे लताड़ा गया। हमें आज बहुत आसानी से अपने आसपास ऐसे अभिभावक मिल जाएंगे

जो अपने बच्चों को यह बताते हैं कि हिन्दी बोलना अपमानजनक है। जिस पीढ़ी को अपनी मातृभाषा के प्रति इस प्रकार की हीनभावना से भर दिया गया हो, वह समाज में अपनी अभिव्यक्ति का आत्मविश्वास किस शोरूम से ख़रीदेगी? जिस पीढ़ी को यह बताया गया हो कि उसकी तुतलाहट की गवाह बनने वाली भाषा, उसके सपनों का स्रोत बनने वाली भाषा और उसके एकान्त की सहगामी बनने वाली भाषा दरअस्ल अपमान का कारण है; वह पीढ़ी अपने मूलाधार में बैठे इस अभिशाप को ढकने के लिए किससे उधारी मांगती फिरेगी!

जब किसी ने हमें डराया कि अंग्रेजी में ही रोज़गार सम्भव है तो हम उसे यह बता ही न सके कि कोकाकोला जैसे ब्रांड को भी भारत में अपना माल बेचने के लिए 'ठण्डा मतलब कोकाकोला' हिन्दी में ही बोलना पड़ा। महंगी से महंगी गाड़ी के विज्ञापनों में हिन्दी देखकर यह हम समझ न सके कि बाज़ार यह बात स्वीकार कर चुका है कि हिन्दीभाषी भी अब महंगी गाड़ी ख़रीदने लगे हैं। राजनीति, क्रिकेट, अध्यात्म, बॉलीवुड और रियल एस्टेट —इनमें से कहीं भी हिन्दी के बिना गुज़ारा नहीं है —यह तथ्य समझ सकें तो हिन्दी को लेकर हमारी घबराहट कुछ कम ज़रूर होगी।

हाँ, सरकारी दफ्तरों में हिन्दी के प्रयोग को लेकर एक नाटक कई दशकों से चला आ रहा है। जनता न्यायालय में हिन्दी में अपील नहीं कर सकती, लेकिन सरकार राजभाषा के प्रति चिन्ता का ढोल बजाने में पीछे नहीं रहती। इस मज़ाक़ का अक्सर मज़ाक़ उड़ाया जाता है। यही एक पटल है जहाँ हिन्दीवाले उपहास के पात्र बनते दिखायी देते हीं। कार्यालयों में हिन्दी की क्या स्थिति है, यह किसी से छिपी नहीं है। राजभाषा विभाग आँकड़े जुटाने में व्यस्त रहता है और राजभाषा समितियाँ पर्यटन को निरीक्षण घोषित करके हिन्दी का शोषण करती रहती हैं।

उपर्युक्त स्थितियाँ अब अभ्यास बन चुकी हैं। इनमें सुधार करने चलेंगे तो उलझ कर रह जाएंगे। हिन्दी को समृद्ध बनाने के लिए जो क़दम उठाये जाने चाहिएँ, वे निम्नलिखित हैं :

**1. देवनागरी के प्रयोग पर बल दें तथा व्याकरण की शुद्धता के प्रति सतर्क रहें।**

2. स्वयं इस सत्य को समझें कि हिन्दी एक रोज़गारपरक भाषा है। स्वयं समझ जाएँ तो अपने बच्चों को भी समझाएँ।

3. घर-परिवार में हिन्दी में बातचीत करें। हिन्दी की जिस भी शैली से आप सम्बद्ध हैं उसके देसी अंदाज़ का पारिवारिक बातचीत में भरपूर प्रयोग करें।

4. किसी भी सरकारी दफ़्तर में काम पड़े तो देवनागरी में ही पत्राचार करें। नियमानुसार कोई भी सरकारी कर्मचारी हिन्दी पत्राचार के लिए मना नहीं कर सकता।

5. बच्चों को हिन्दी की लोकप्रिय कविताएँ कण्ठस्थ कराएँ ताकि उनको अपनी भाषा के सौन्दर्य व सामर्थ्य की अनुभूति हो सके।

6. हिन्दी की विविध बोलियों के लोकगीत सुनें, इससे आपका भाषा कौशल विकसित होगा।

7. परिमार्जित हिन्दी वक्ताओं के वक्तव्य तथा लेख पढ़ें, इससे आपकी शब्दावली समृद्ध होगी।

8. अन्य भाषाओं का सम्मान करें ताकि अन्य भाषाभाषी भी आपकी भाषा को आदर दे सकें।

9. अपनी भाषा के विकास की चर्चा को किसी भी स्थिति में अन्य भाषा से तुलनात्मक अध्ययन बनाकर न छोड़ें।

10. इस तथ्य को स्मरण रखें कि हिन्दी की सरलता में ही उसकी समृद्धि भी छिपी है और सौन्दर्य भी।

11. हस्ताक्षर करते समय देवनागरी लिपि का ही प्रयोग करें।

ध्यान रखें, भाषा और आदमी की दीर्घायु के लिए यह आवश्यक है कि इन दोनों का पाचन दुरुस्त हो।

चिराग़ जैन

# बहुत कठिन है डगर पनघट की

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है और जब एक ही भाषा को जानने वाले आपस में संवाद करते हैं तो उनमें विचारों का आदान-प्रदान सहजता से हो जाता है। इस तरह भाषा समूचे देश के नागरिकों को एक माला में पिरोती है और यही किसी भी राष्ट्र की ताकत होती है।

स्वतन्त्रता के 74 वर्ष बाद भी हम ऐसे मोड़ पर खड़े हैं जहाँ स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा जा सकता कि हमारी राष्ट्रभाषा क्या है। भारत के संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। ऐसा इसलिए किया गया था कि उस समय देश में हिन्दी जानने, बोलने व समझने वालों की संख्या अन्य भाषाओं की तुलना में अधिक थी। यह स्थिति आज भी बनी हुई है। किन्तु राजभाषा बनाने के साथ-साथ संविधान में एक धारा और जोड़ दी गयी कि 15 वर्ष तक अंग्रेजी का प्रयोग उन सभी कार्यों के लिए जारी रहेगा, जिन कार्यों के लिए इसका प्रयोग स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व किया जाता था। हालाँकि संविधान निर्माताओं द्वारा यह प्रावधान समय की आवश्यकता को देखते हुए पूरी सदाशयता से किया गया था। पन्द्रह वर्ष का समय इसलिए दिया गया कि तब तक हम हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए उपयुक्त तन्त्र विकसित कर लेंगे, कर्मचारियों को प्रशिक्षण दे देंगे और शब्दावलियों का निर्माण भी कर लेंगे। किन्तु संविधान के उपर्युक्त प्रावधान की आड़ में हिन्दी को अपनाने के विरोध और उसे थोपे जाने को लेकर, जिस तरह के आन्दोलन हुए उन्होंने स्थिति को पूरी तरह से बदल दिया। हिन्दी गौण हो गयी व अंग्रेजी का प्रयोग उसी तरह जारी रहा, जिस तरह अंग्रेजी राज में होता था। आज भी हम उस स्थिति से उबर नहीं पाये हैं।

कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति अभी भी सन्तोषजनक नहीं कही जा सकती है। कार्यालयीन हिन्दी को जिस तरह से प्रस्तुत किया जाता है वह जनमानस के समझ में सहजता से आ जाए, ऐसा हो नहीं पाता। इसका मुख्य कारण है कि अभी भी जब हिन्दी के प्रयोग की बात की जाती है तो अधिकारी अथवा कर्मचारी पहले अंग्रेजी में सोचता है और फिर उसका अनुवाद कर उसे हिन्दी में लिखने का प्रयास करता है। ऐसा करते समय वह हिन्दी में कार्य करने वाला न होकर एक अनुवादक की भूमिका में आ जाता है। इस प्रक्रिया में अक्सर कर्मचारी अपने आपको कठिन स्थिति में पाता है और फिर कार्य की तात्कालिकता की आड़ में वह हिन्दी के प्रयोग के प्रति उदासीन हो जाता है। ऐसे वातावरण में हिन्दी का प्रयोग वस्तुत: उन कर्मचारियों पर निर्भर है जो कि हिन्दी के प्रति विशेष अनुराग रखते हैं। इसके अतिरिक्त संवैधानिक आवश्यकताओं की विवशता की पूर्ति के तहत हिन्दी अनुभाग के माध्यम से अनुवाद कराने के उपरान्त हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। सीधे शब्दों में कहा जाय तो हिन्दी अनुवाद की भाषा अधिक व प्रयोग की भाषा कम दिखायी देती है ।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 4 के अन्तर्गत एक संसदीय राजभाषा समिति के गठन का प्रावधान है व यह समिति कई वर्षों से भारत सरकार के विभिन्न मन्त्रालयों, विभागों व उपक्रमों में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति का निरीक्षण करती है। इसके बाद भी आज हिन्दी केवल आँकड़ों में ही दिखायी देती है। ज़मीनी हकीक़त यह है कि भारत सरकार के अधिकांश कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति शोचनीय है ।

जब कोई विषय राजनीति के मकड़जाल में फँस जाता है, तो उसका समाधान सरलता से नहीं होता है। हिन्दी ऐसी ही स्थिति की शिकार हो गयी है। आज देश के सामने कई समस्याएँ हैं और हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने की बात अगर की गयी तो यह चर्चा मात्र ही सबसे विकराल रूप ले लेगी और कोई भी सरकार ऐसी स्थिति के लिए फिलहाल तैयार होती नहीं दिख रही है। ऐसा इसलिए भी कि यदि उसने इस समस्या को छुआ तो अन्य समस्याएँ पीछे चली जाएंगी और यह समस्या सबसे आगे हो जाएगी। इसके

लिए जिस साहस व दृढ़ता की आवश्यकता है उसके लिए अभी उचित वातावरण बनता दिखायी नहीं देता है।

जब कम्प्यूटर का आगमन हुआ तो उसके कारण हिन्दी के प्रयोग में कुछ समय के लिए रुकावट आयी व उसमें सुधार करने में कुछ समय लगा। आज तरह-तरह के सॉफ्टवेयर तैयार किए जाते हैं किन्तु सभी आरम्भ में अंग्रेजी में ही बनते हैं और ऐसी स्थिति में हिन्दी में जो कार्य किया जा रहा होता है वह प्रभावित होता है। दूसरी बड़ी चुनौती शिक्षा नीति को लेकर है जिसमें भाषा को लेकर स्पष्टता नहीं रही है। नयी शिक्षा नीति में इस पर कुछ विचार किया गया है पर उसका असर आने में अभी समय लगेगा। तीसरी चुनौती यह है कि हिन्दी की प्रगति की बात करते ही राज्य सरकारें विरोध करने लगती हैं। केन्द्र सरकार राज्य सरकारों से सम्बन्धों को देखकर कई बार अपने क़दम पीछे खींच चुकी है।

हिन्दी पखवाड़ा भी एक अनुपम उदाहरण है जिसमें औपचारिकताओं की भरमार होती है। दीप प्रज्ज्वलन से लेकर पुरस्कार वितरण तक के कार्यक्रम औपचारिकताओं से सुसज्जित होते हैं। इस कार्यक्रम के समापन पर हिन्दी अनुभाग को गंगा नहाने जैसी अनुभूति होती है और कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी इसे हिन्दी का समापन मानकर अंग्रेजी की धारा में बहने लगते हैं।

कुल मिलाकर हिन्दी को यदि पक्के तौर पर प्रतिष्ठित किया जाना है तो इसके लिए ठोस व साहसी उपायों की आवश्यकता है अन्यथा यह जिस स्थिति में आज है उसी स्थिति में आगे भी रहेगी और इसका उचित मान-सम्मान कब होगा यह भविष्य के गर्त में तब तक दबा रहेगा जब तक कि इसका उद्धार करने के लिए किसी युगपुरुष अथवा जनान्दोलन का जन्म न हो जाए।

● राजेन्द्र प्रसाद

## एकदा

किसी ने अटल बिहारी वाजपेयी जी को चिढ़ाने के उद्देश्य से कहा – "अटल जी, आपकी हिन्दी में ईमानदार नहीं होता।"

अटल जी ने तपाक से उत्तर दिया – "हिन्दी में तो बेईमान भी नहीं होता।"

# सिक्किम में हिन्दी

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। जितना विस्तृत हिन्दी भाषा का रूप है उससे कहीं अधिक विस्तृत इसका साहित्य है। हिन्दी हिन्दुस्तान के बहुत सारे हिस्सों में बोली जाती है लेकिन हिन्दी साहित्य का सृजन देश के कोने-कोने में या यूँ कह लीजिए देश ही नहीं विदेशों में भी होता है। भारत के किसी भी राज्य में चले जाइये, वहाँ आपको हिन्दी का कोई न कोई सपूत सृजन की बगिया में देवनागरी के फूल खिलाता हुआ मिल ही जाएगा।

आइए आज आपका परिचय हिन्दुस्तान के एक ऐसे राज्य से करवाते हैं जिसकी क्षेत्रीय भाषा कुछ और है फिर भी वहाँ के लोगों का हिन्दी साहित्य के प्रति बहुत अधिक लगाव है। उनकी लेखनी जितनी ख़ूबसूरती से अपनी क्षेत्रीय भाषा में चलती है उतनी ही ख़ूबसूरती से हिन्दी साहित्य में भी सृजन करती है। यह राज्य है प्रकृति की गोद में बसा छोटा-सा 'सिक्किम'।

सिक्किम की क्षेत्रीय भाषा नेपाली है। नेपाली बहुत ही मीठी बोली है। इसकी बोली में एक संगीत-सा छिपा हुआ है। यहाँ के लोगों ने हिन्दी का आतिथि-सत्कार ऐसे किया है जैसे कोई अपनी माँ या बड़ी बहन का करता है। आज सिक्किम में नेपाली के साथ ही हिन्दी साहित्य का सृजन भी बराबर हो रहा है। यहाँ हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार और साहित्य सृजन के प्रोत्साहन के लिए कई संस्थाएँ, संगठन और मंच सक्रिय हैं। सिक्किम की राजधानी गंगटोक में एक संस्था है 'हिन्दी साहित्य सेवा समिति'। इसका गठन वर्ष 2017 में हुआ है। इसके अध्यक्ष भीम ठटाल, उपाध्यक्ष भक्ति शर्मा, महासचिव मणिका शर्मा, संयोजक रूपा तमांग और कोषाध्यक्ष अर्जुन यावा हैं। यह संस्था गंगटोक के विभिन्न स्थानों पर काव्य

गोष्ठी का आयोजन करती है। हिन्दी पखवाड़ा के अवसर पर भी इस समिति द्वारा भव्य आयोजन किया जाता है।

इसके अतिरिक्त 'राष्ट्रीय महिला काव्य मंच' भी सक्किम में हिन्दी साहित्य के प्रसार के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस संस्था द्वारा सिक्किम मासिक गोष्ठी का आयोजन किया जाता है।

'सृजनात्मक वैचारिक मंच' राउते रुमतेक, सिक्किम के साथ मिलकर हिन्दी के लिए कार्यरत है। उत्तर प्रदेश के तमसा तट, मऊ की एक संस्था 'ऊँ कोशिश अन्तर्नाद' भी सिक्किम में हिन्दी साहित्य के प्रचार प्रसार के लिए कार्य कर रही है। अन्तर्नाद सिक्किम के अध्यक्ष हरिभक्त शर्मा, उपाध्यक्ष शिवप्रसाद नेउपाने, महासचिव प्रीति केसरवानी और संयोजक प्रेम नेउपाने हैं। अंतर्नाद सिक्किम की स्थापना 26 जनवरी वर्ष 2019 में की पुरुषार्थ सिंह द्वारा की गयी है। इसके द्वारा सिक्किम का अब तक का सबसे बड़ा कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया है तथा संस्था एक वाार्षिक काव्य गोष्ठी का भी आयोजन करती है। इस वर्ष से एक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया गया है।

और भी बहुत सारी छोटी-छोटी कोशिशें हिमालय की इन वादियों में हिन्दी के लिए की जा रही हैं। इन छोटे-छोटे प्रयासों से यहाँ जो बीज बोए जा रहे हैं उनको देखकर कहा जा सकता है कि यहाँ से आगे चलकर हिन्दी साहित्य को अच्छे सृजनकार मिलेंगे।

●प्रीति केसरवानी



## राधिका राधिका

वेणु कब तक सहे राधिका-राधिका
जब अधर खुद कहे राधिका-राधिका

सारा ब्रज उनको जपता रहा पर सदा
कृष्ण जपते रहे राधिका-राधिका

कृष्ण के भावमय कूल पर प्रीति की
भानुजा-सी बहे राधिका-राधिका

कृष्ण तो यज्ञ हैं किन्तु उनके ही संग
आहुति बन दहे राधिका-राधिका

—उत्कर्ष अग्निहोत्री

# कवि-कुनबा कलैण्डर (सितम्बर)

| | | |
|---|---|---|
| 1 सितम्बर | जन्मदिन | मुन्ना बैटरी |
| | जयन्ती | शिशुपाल सिंह शिशु |
| | जयन्ती | दुष्यन्त कुमार |
| 3 सितम्बर | पुण्यतिथि | शंभुनाथ सिंह |
| 4 सितम्बर | जन्मदिन | घनश्याम अग्रवाल |
| | जन्मदिन | दीक्षित दनकौरी |
| | पुण्यतिथि | रामअवतार चेतन |
| | पुण्यतिथि | धर्मवीर भारती |
| 5 सितम्बर | जन्मदिन | अना देहलवी |
| | जयन्ती | जैमिनी हरियाणवी |
| | पुण्यतिथि | शरद जोशी |
| 7 सितम्बर | जन्मदिन | गुरु सक्सेना |
| | जन्मदिन | मनीषा शुक्ला |
| 8 सितम्बर | जन्मदिन | वीरेन्द्र विद्रोही |
| | जन्मदिन | सन्दीप शजर |
| | जयन्ती | प्रज्ञा वाजपेयी |
| | पुण्यतिथि | रमेश यादव |
| 9 सितम्बर | जन्मदिन | कुसुम जोशी |
| | जयन्ती | भारतेन्दु हरिश्चन्द्र |
| | जयन्ती | श्यामलाल गुप्त पार्षद |
| | जयन्ती | अवतार सिंह संधु पाश |
| | पुण्यतिथि | अकबर इलाहाबादी |
| | पुण्यतिथि | जिगर मुरादाबादी |
| | पुण्यतिथि | रामवृक्ष बेनीपुरी |
| | पुण्यतिथि | महावीर सिकरवार |
| 10 सितम्बर | जन्मदिन | प्रभा ठाकुर |
| | जन्मदिन | अतुल अजनबी |
| | पुण्यतिथि | पुरुषोत्तम प्रतीक |
| | पुण्यतिथि | आज़ाद कानपुरी |
| 11 सितम्बर | जयन्ती | कन्हैयालाल सेठिया |
| | पुण्यतिथि | सुब्रमण्यम भारती |
| | पुण्यतिथि | गजानन माधव मुक्तिबोध |
| | पुण्यतिथि | महादेवी वर्मा |

# कवि-कुनबा कलैण्डर (सितम्बर)

| | | |
|---|---|---|
| 12 सितम्बर | जयन्ती | रमेश रंजक |
| | पुण्यतिथि | देवराज दिनेश |
| 14 सितम्बर | जन्मदिन | गोपीनाथ उपेक्षित |
| 15 सितम्बर | जयन्ती | खुमार बाराबंकवी |
| | जयन्ती | सर्वेश्वर दयाल सक्सेना |
| | जयन्ती | विश्वेश्वर शर्मा |
| 16 सितम्बर | जन्मदिन | प्रसून जोशी |
| | जन्मदिन | दीपक पारीक |
| 17 सितम्बर | जन्मदिन | अंजुम रहबर |
| | जन्मदिन | कविता किरण |
| | जन्मदिन | मुमताज़ नसीम |
| | पुण्यतिथि | माणिक वर्मा |
| | पुण्यतिथि | हसरत जयपुरी |
| 18 सितम्बर | जयन्ती | काका हाथरसी |
| | पुण्यतिथि | काका हाथरसी |
| | पुण्यतिथि | मुकुट बिहारी सरोज |
| 20 सितम्बर | जन्मदिन | सत्यदेव हरियाणवी |
| | जन्मदिन | मंगल नसीम |
| | जन्मदिन | प्रताप फौजदार |
| | पुण्यतिथि | मीर तक़ी मीर |
| 21 सितम्बर | पुण्यतिथि | नारायणदास निर्झर |
| 22 सितम्बर | जन्मदिन | धमचक मुल्तानी |
| | जन्मदिन | कर्नल वी पी सिंह |
| 23 सितम्बर | जन्मदिन | शिवओम अम्बर |
| | जयन्ती | रामधारी सिंह दिनकर |
| 24 सितम्बर | पुण्यतिथि | सर्वेश्वर दयाल सक्सेना |
| 25 सितम्बर | जयन्ती | योगेन्द्र मौद्गिल |
| | पुण्यतिथि | कन्हैयालाल नन्दन |
| 27 सितम्बर | जन्मदिन | अब्दुल गफ़्फ़ार |
| | जन्मदिन | नितिश कुमार राजपूत |
| | जयन्ती | रामस्वरूप सिन्दूर |
| 29 सितम्बर | जन्मदिन | राजेन्द्र मालवीय आलसी |
| 30 सितम्बर | जन्मदिन | स्वधा रवीन्द्र |

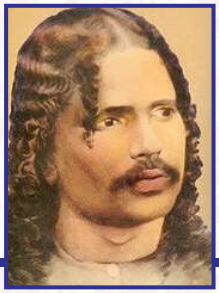

# निज भाषा उन्नति

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥

अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन।
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन॥

उन्नति पूरी है तबहिं, जब घर उन्नति होय।
निज शरीर उन्नति किये, रहत मूढ़ सब कोय॥

निज भाषा उन्नति बिना, कबहुँ न ह्वैहें सोय।
लाख उपाय अनेक यों, भले करे किन कोय॥

इक भाषा इक जीव इक मति सब घर के लोग।
तबै बनत है सबन सों, मिटत मूढ़ता सोग॥

और एक अति लाभ यह, या में प्रगट लखात।
जिभा भाषा में कीजिये, जो विद्या की बात॥

तेहि सुनि पावै लाभ सब, बात सुनै जो कोय।
यह गुन भाषा और महँ, कबहूँ नाहीं होय॥

विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देसन से लै करहू, भाष माहि प्रचार॥

भारत में सब भिन्न अति, ताहीं सों उत्पात।
विविध देस मतहू विविध, भाषा विविध लखात॥

सब मिल तासों छाँड़ि कै, दूजे और उपाय।
उन्नति भाषा की करहु, अहो भ्रातगन आय॥

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

# जय हिन्दी जय भारती

सरल, सरस भावों की धारा
जय हिन्दी जय भारती

शब्द-शब्द में अपनापन है, वाक्य भरे हैं प्यार से
सबको ही मोहित कर लेती हिन्दी, निज व्यवहार से

सदा बढ़ाती भाईचारा
जय हिन्दी, जय भारती

नैतिक मूल्य सिखाती रहती, दीप जलाती ज्ञान के
जन-गण-मन में द्वार खोलती, नूतनतम विज्ञान के

नवप्रकाश का नूतन तारा
जय हिन्दी, जय भारती

देवनागरी भर देती है, संस्कृत की नवगन्ध से
इन्द्रधनुष से रंग बिखराती, नवरस, नव-अनुबन्ध से

विश्वग्राम बनता जग सारा
जय हिन्दी जय भारती

सरल, सरस भावों की धारा
जय हिन्दी जय भारती

त्रिलोक सिंह ठकुरेला

# हिन्दी का गुणगान

माँ ने जो हमको सिखलाई उस भाषा का मान करो
हिन्दी बोलो, हिन्दी लिखो, हिन्दी का गुणगान करो

हिन्दी के हम सुत, हिन्दी की आन-बान दिखलानी है
भूमण्डल पर इस भाषा की इक पहचान बनानी है
हर आंगन में हमें नागरी का इक दीप जलाना है
अखिल विश्व में हिन्दी का अब ध्वज हमको फहराना है
हिन्दी मातृभूमि की भाषा है इसका सम्मान करो
हिन्दी बोलो, हिन्दी लिखो, हिन्दी का गुणगान करो

हिन्दी ने ही युद्धभूमि में तलवारों के काम किए
हिन्दी के नारों ने ही तो अंगारों के काम किए
हिन्दी के शब्दों की आभा मोहक है, सुखदायी है
हिन्दी के नारों से ही हमने आज़ादी पाई है
आओ मिलकर इस भाषा पर जीवन भर अभिमान करो
हिन्दी बोलो, हिन्दी लिखो, हिन्दी का गुणगान करो

सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है
भाषा मात्र नहीं जन-गण-मन की अभिलाषा हिन्दी है
विश्व पटल पर यदि फिर से अपना लोहा मनवाना है
तो हमको हिन्दी माता पर अपना गर्व बढ़ाना है
लक्ष्य अटल है, अटल लक्ष्य का पौरुष से सन्धान करो
हिन्दी बोलो, हिन्दी लिखो, हिन्दी का गुणगान करो

गोपाल पाण्डेय

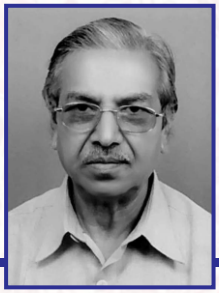

# लौट आएंगे

सफलता के गगन छूकर, धरा पर लौट आएंगे
थकन से चूर पंछी शाम को घर लौट आएंगे

जिन्हें ले जा रहा है स्वर्ण-मृग का लोभ जंगल में
तनिक-सी दूर जाकर वे धनुर्धर लौट आएंगे

इसी विश्वास पर सोयी नहीं है आज भी राधा
कि मथुरा से किसी दिन श्याम-सुन्दर लौट आएंगे

धरा की वस्तु को आकाश कब स्वीकार करता है
पिये हैं सूर्य ने जितने सरोवर; लौट आएंगे

बस इतनी आस लेकर जा रहे हैं द्वार पर उसके
उसे अ-पलक निहारेंगे घड़ी भर; लौट आएंगे

जहाँ विश्वास और सन्देह की मिलती हैं सीमाएँ
वहीं पर हम तुम्हारा नाम लिखकर लौट आएंगे

**गोविन्द आर्य 'निशात'**

अभी भी धड़कनों में हैं, कबीरा, जायसी, खुसरो
हमारी एकता का विश्व में सहगान है हिन्दी

**राम नारायण मीणा 'हलधर'**

# सत्य एकमात्र है

जो दिख रहा है सामने वो दृश्य मात्र है
लिखी रखी है पटकथा, मनुष्य पात्र है

नये नियम समय के हैं असत्य; सत्य है
भरा पड़ा है छल से जो वही सुपात्र है

विचारशील मुग्ध हैं 'कथित प्रसिद्धि' पर
विचित्र है समय, विवेक शून्य-मात्र है

है साम-दाम-दण्ड-भेद का नया चलन
कि जो यहाँ सुपात्र है, वही कुपात्र है

घिरा हुआ है पार्थ-पुत्र चक्रव्यूह में
असत्य सात और सत्य एक मात्र है

कहीं कबीर, सूर की, कहीं नज़ीर की
परम्परा से धन्य ये ग़ज़ल का छात्र है

**आलोक श्रीवास्तव**

अपनी हिन्दी तो है भैया, माखनचोर कन्हैया जैसी
हर भाषा-बोली से उसके शब्द चुराकर ले आती है

**बशीर अहमद मयूख**

# हिन्दी माता

हिन्दी माता को करें, काका कवि डंडौत
बूढ़ी दादी संस्कृत, भाषाओं का स्रोत।
भाषाओं का स्रोत कि 'बारह बहुएँ' जिसकी
आँख मिला पाए उससे, हिम्मत है किसकी?
ईर्ष्या करके ब्रिटेन ने इक दासी भेजी
सब बहुओं के सिर पर चढ़ बैठी अंगरेजी।

गोरे-चिट्टे-चुलबुले, अंग-प्रत्यंग प्रत्येक,
मालिक लट्टू हो गया, नाक-नक्श को देख।
नाक-नक्श को देख, डिग गई नीयत उसकी,
स्वामी को समझाए, भला हिम्मत है किसकी?
अंगरेजी पटरानी बनकर थिरक रही है,
संस्कृत-हिन्दी, दासी बनकर सिसक रही हैं।

परिचित हैं इस तथ्य से, सभी वर्ग-अपवर्ग,
सास-बहू में मेल हो, घर बन जाए स्वर्ग।
घर बन जाए स्वर्ग, सास की करें हिमायत,
प्रगति करे अवरुद्ध, भला किसकी है ताकत?
किन्तु फ़िदा दासी पर है, 'गृहस्वामी' जब तक,
इस घर से वह नहीं निकल सकती है तब तक।

**काका हाथरसी**

गंगा-कावेरी की धारा साथ मिलाती हिन्दी है
पूरब-पश्चिम कमल पाँखुरी सेतु बनाती हिन्दी है

**गिरिजा कुमार माथुर**

# चन्दन और अबीर

सागर चरण पखारे, गंगा शीश चढ़ावे नीर
मेरे भारत की माटी है चन्दन और अबीर
सौ-सौ नमन करूँ मैं भैया, सौ-सौ नमन करूँ

मंगल भवन अमंगलहारी के गुण तुलसी गावे
सूरदास का श्याम रंगा मन अनत कहा सुख पावे
ज़हर का प्याला हँसकर पी गयी प्रेम दीवानी मीरा
ज्यों की त्यों धर दीन्हीं चुनरिया, कह गये दास कबीर

फूटै फरई मटर की, भुटिया भुने, झरे झरबेरी
मिले कलेऊ में बजरा की रोटी मठा मठेरी
बेटा मांगे गुड़ की डलिया, बिटिया चना चबैना
भाभी मांगे खट्टी अमिया, भैया रस की खीर

फूटे रंग मौर के बन में, खोले बन्द किवड़िया
हरी झील में छप-छप तैरें, मछरी-सी किन्नरिया
लहर-लहर में झेलम झूमें, गावै मीठी लोरी
पर्वत के पीछे नित सोहे चन्दा-सा कश्मीर

चैत चान्दनी हँसे, पूस में पछुआ तन-मन परसे
जेठ तपे धरती गिरजा-सी, सावन अमृत बरसे
फागुन मारै रस की भर-भर केसरिया पिचकारी
भीजे आँचल, तन-मन भीजे, भीजे पचरंग चीर

मेरे भारत की माटी है चन्दन और अबीर
सौ-सौ नमन करूँ मैं भैया, सौ-सौ नमन करूँ

सोम ठाकुर

# हमारो रसिया

हमारो रसिया, है प्यारो रसिया
रीझै बहुत रिझावै हमकू म्हारो रसिया

करे कलेऊ रोज दूध के ऊपर की मलाई
बचे दूध की चाय ढकोसै, भोजन संग मिठाई
एक साग बनवावै रसीलौ दूजो सूखो मांगै
री बहना दूजो सूखे मांगै
चार परत के पलटा खावै घी ऊपर तैं चाहवै
एक कौर दे हमें हमारो भोग लगावै रसिया

घर को साहब चलौ दफ़्तर कू, मुड़-मुड़ देखे हमकू
डीयर, डार्लिंग बोले हमतैं जे दफ़्तर को बाबू
जेठ की गर्मी सों पागलपन जब सिर पे मंडरावै
सखी री जब सिर पे मंडरावै
छोटी-छोटी बातिन पे जे गुड़ खा के चढ़ जावै
पानन कू पइसा मांगे रिरियावे रसिया

एक मात्र है पुत्र हमारौ, बाप तै आगे जावै
जितनो नखरा करै बाप, वो दूनो कर दिखलावै
बाप-पूत तो डाल-पात हैं इनकी लम्बरदारी
घर में इनकी लम्बरदारी
दोनों बिटिया बनी गिलहरी हम ठहरी महतारी
पूत के सिर पे हाथ फिरावै खिझावै रसिया

रमेश रमन

कवि सम्मेलन संग्रहालय

**राष्ट्रपति भवन में**
**श्री जैमिनी हरियाणवी को सम्मानित करते हुए**
**तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम डॉ. शंकर दयाल शर्मा**
चित्र साभार : श्री जैमिनी परिवार

कवि सम्मेलन संग्रहालय

# हिन्दी साहित्य में वाडा क़ानून

यह एक सामान्य-सा सामान्य ज्ञान का प्रश्न है कि वाडा क़ानून किससे सम्बन्धित है? यह प्रश्न प्रतियोगिताओं में अक्सर पूछा जाता है। इसका उत्तर है, यह क़ानून खेलों से सम्बन्धित है। अन्य खेलों में इस क़ानून को लेकर उतना हंगामा नहीं होता, जितना क्रिकेट में होता है। क्रिकेट का खेल, दरअस्ल किसी निर्वाचित सदन की कार्रवाई की तरह ही हंगामेदार होता है। जिस तरह भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी बीसीसीआई पर भारी पड़ता है, उसी तरह सदन में हंगामा करनेवाले सदस्य गम्भीर सदस्यों और अध्यक्ष पर भारी पड़ जाते हैं।

भारतीय खिलाड़ियों ने साफ़-साफ़ कह दिया है कि वे सख़्त वाडा क़ानून का विरोध करते रहेंगे।यह भी कोई बात है, हम छुट्टियाँ मनाने यूरोप जाएँ और आप वाडा का कैमरा लेकर हमारे पीछे-पीछे आएँ। हमने खेल वाले कैरियर का वरण किया है, किसी का अपहरण नहीं किया है! यह ठीक है कि हम खेल के दिनों में नशा नहीं करेंगे, पर घूमने-घामने में नशा करें तो क्या बुराई है? हमें ऐसा कोई क़ानून मान्य नहीं है, जो हमारे मौलिक अधिकारों का हनन करता हो।

ख़ैर साहब! क्रिकेट से हमारा उतना ही सरोकार है, जितना,नेताओं का आम आदमी की समस्याओं से होता है। हमारी ख़ुशफ़हमी यह है कि हम साहित्यकार हैं। मित्रों की राय है, हिन्दी साहित्य में जो कुछ ग़लत हो रहा है, वह सिर्फ़ हमारी वजह से हो रहा है!

'लीक से हटकर चलने वालों की इसी तरह आलोचना होती है' —यह सोचकर हम मित्रों की बातों पर ग़ौर नहीं करते। तमाम तरह के सर्वे के बाद हमने निष्कर्ष निकाला है कि वाडा क़ानून साहित्य में भी लागू होना चाहिए। यदि ऐसा हो जाता है, तो बड़े-बड़े साहित्यकारों की पोल खुल सकती है। इस क़ानून में शराब, भांग,

अफ़ीम आदि का एंटी डोपिंग टेस्ट आवश्यक हो जाएगा। मंचीय कवि मंचों पर हिन्दी कविता के साथ जो अश्लील हरकतें करते हैं, वे बन्द हो जाएंगी। मंचीय कवि दारू में धुत्त होकर कविता के साथ ज़ोर-ज़बरदस्ती करते रहते हैं। असहाय हिन्दी कविता बड़ी उम्मीद से श्रोताओं की ओर देखती है, मग़र वहाँ भी उसे अपमानजनक हँसी-ठहाके नज़र आते हैं।

इसका मतलब यह नहीं है कि छपने-छपाने वाले कवि हिन्दी कविता से अच्छा व्यवहार करते हैं। वे भी नशे में धुत्त होकर हिन्दी कविता के साथ अश्लील हरकतें करते हैं। कुछ लेखकों के बारे में यह मान्यता है कि वे प्रतिभाशाली हैं और इस प्रतिभा के बरक्स कुछ वज़नदार किताबें लिखते हैं। यदि उनका एंटीडोपिंग टेस्ट करवाया जाए, तो बहुत सम्भव है कि यह निष्कर्ष सामने आए कि उनके प्रतिभाशाली होने का कारण सिर्फ़ शराब है! हिन्दी साहित्य में यह प्रचलित धारणा है कि शराब के नशे में लेखक अच्छा लिखता है।

सीन कुछ इस तरह होगा कि लेखक को इधर लाखों का पुरस्कार मिलेगा, उधर वाडा वाले उस नशेड़ी साबित कर देंगे! अन्य लेखक मांग कर सकते हैं कि उस लेखक से पुरस्कार छीनकर उस शराब कम्पनी को दे दिया जाए, जिसकी कई बोतलें पीकर लेखक ने कालजयी रचना लिखी है। हिन्दी साहित्य के लिए बने वाडा क़ानून में किसी लेखक को निज पत्नी के अलावा किसी अन्य महिला से प्रेम करने की छूट नहीं होगी। वाडा की नज़र लेखक की यात्राओं पर भी रहेगी।

हमारे देश का चिरकुट लेखक भी यात्रा पर निकल पड़ता है। यात्राओं से उसे अनुभव मिलते हैं। प्रेमिका साथ हो तो अनुभव दोगुने हो जाते हैं। वाडा क़ानून ऐसे लेखकों का पर्दाफ़ाश करेगा। वह यह भी बताएगा कि लेखक ने यात्राओं के दौरान किन-किन नवोदित लेखिकाओं से मुलाकात की। इसके लिए एक फॉरेंसिक जाँच किट को डेवलप किया जाएगा। भविष्य में हिन्दी अकादमियों और संस्थानों के अध्यक्षों को इस जाँच से गुज़रना होगा।

हिन्दी साहित्य में यदि वाडा क़ानून लागू करना है, तो सबसे पहले समीक्षकों पर लागू करना पड़ेगा। हिन्दी जगत् का समीक्षक सर्वाधिक निरंकुश प्राणी होता है। उसका न्याय-दर्शन से कोई

वास्ता नहीं होता। वह किसी भी लेखक को सूली पर चढ़ा सकता है। वह ज़्यादा ख़ातिरदारी करने वाले लेखक-लेखिकाओं को महत्व देता है। वह अव्वल दर्जे का ख़ुशामदीद होता है। वह पक्षपात करते हुए, यह कहता हुआ पाया जाता है कि अमुक लेखक ने नई ज़मीन तोड़ी है! सच्चाई यह है कि उस लेखक ने कभी काँच का गिलास भी नहीं तोड़ा। इस तरह के बयान देने वाले समीक्षकों का एंटी डोपिंग टेस्ट बहुत आवश्यक है। एल्कोहल मिलने पर ऐसे समीक्षक को समीक्षा हेतु प्रतिबन्धित कर दिया जाएगा। कुल मिलाकर वाडा क़ानून की ज़रूरत खेल से ज़्यादा हिन्दी साहित्य में महसूस की जा रही है।

अरविन्द तिवारी

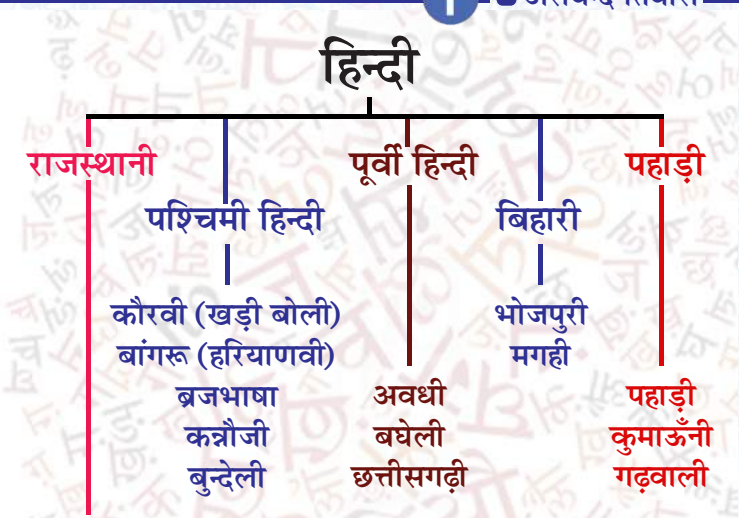


मारवाड़ी (पश्चिमी राजस्थानी)
जयपुरी/ढुंढाड़ी (पूर्वी राजस्थानी)
मेवाती (उत्तरी राजस्थानी)
मालवी (दक्षिणी राजस्थानी)

हिन्दीतर क्षेत्रों में भी हिन्दी की विविध शैलियाँ विद्यमान हैं। भारत में दक्खिनी हिन्दी, मुम्बइया हिन्दी तथा कलकतिया हिन्दी प्रमुख हैं। भारत से बाहर भी अनेक देशों में हिन्दी अपने अलग रंग-ढंग के साथ बोली जाती है।

# बात निकलेगी तो फिर दूर तलक़ जाएगी

पंक्तियाँ पहल की शुरुआत आज से चार साल पहले एक इंस्टाग्राम पेज के रूप में हुई थी। पिछले चार वर्ष में कोशिश रही है कि हिन्दी लेखन और पाठन की दुनिया में नए लोगों को जोड़ा जाए। सोशल मीडिया के सभी प्लेटफॉर्म्स को मिलाकर कर आज पंक्तियाँ परिवार छह लाख से ज़्यादा लोगों को जोड़ चुका है। इस सफ़र में मिली सराहना एवं आलोचना से बहुत कुछ सीखने को मिला। हम हर सीख के साथ पहल को और बेहतर करने की कोशिश करते रहे हैं और आगे भी करते रहेंगे।

हिन्दी कॅम्युनिटी में काम करते हुए मैंने जाना कि यह बहुत छोटे समूहों में बँटी हुई है, जो कि एक सामान्य बात है। लेकिन समस्या यह है कि ये छोटे-छोटे समूह एक-दूसरे से जुड़े हुए नहीं हैं। जिसके कारण कोई भी जानकारी सिर्फ़ एक छोटे से समूह तक सीमित रह जाती है। इस कॅम्यूनिटी के सभी हिस्सों पर मीडिया की नज़र भी नहीं है, जिस कारण सभी जानकारियाँ एक कम्यूनिटी के स्तर पर प्रसारित नहीं हो पाती हैं। तकनीकी बैकग्राउंड होने की वजह से हमने इस समस्या को तकनीक के माध्यम से हल करने के लिए पंक्तियाँ एप लॉन्च किया है, जिसका उद्देश्य है कि पूरी हिन्दी कॅम्यूनिटी को एक प्लेटफॉर्म पर लाया जाए। सिर्फ़ चार महीनों में 20,000 हज़ार लोग इस पहल से जुड़ चुके हैं और हर सुधार के साथ जुड़ने वाले लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है।

आप लोग भी इस प्रयास में हमारा साथ दें और हिन्दी कॅम्यूनिटी को डिजिटली जोड़ने में हमारी मदद करें। पंक्तियाँ के आइकॉन पर क्लिक करके आप हमारे एप और सोशल मीडिया अकाउंट्स तक पहुँच सकते हैं।

कविग्राम ब्यूरो

# हिन्दी हैं हम

**पहला दृश्य**

एक औसत दर्जे का घर। गिरधारी लाल शर्मा अपने ड्राइंगरूम में सोफ़े पर बैठे हुए कोई पुराना हिन्दी का अख़बार पढ़ रहे हैं। तभी लक्ष्मी देवी चाय लेकर आती हैं।

गिरधारी लाल शर्मा : आज का हिन्दी अख़बार कहीं नज़र नहीं आ रहा है लक्ष्मी।

लक्ष्मी देवी : आज आपके बड़े बेटे रोहित ने हिन्दी का अख़बार बन्द करके घर में अंग्रेज़ी अख़बार मंगवाया है।

गिरधारी लाल : (हैरत से) क्यों ऐसा क्यों किया रोहित ने? जबकि सबको पता है कि मैं हिन्दी अख़बार पढ़ता हूँ। मेरी दिनचर्या अपनी मातृभाषा को सम्मान देने से शुरू होती है।

लक्ष्मी देवी : हमारा बेटा रोहित कह रहा था घर में सब बहन भाई अंग्रेज़ी ही बोलते हैं और समझते हैं। फिर हिन्दी अख़बार का घर में मंगवाना मम्मी मुझे समझ नहीं आता।

गिरधारी लाल : लक्ष्मी, तुमने रोहित की ये बात सुनकर कोई प्रतिक्रिया ज़ाहिर नहीं की? ताज्जुब है!

लक्ष्मी देवी : जी, मैंने रोहित से कहा था, लेकिन उसने मेरी एक न मानी।

गिरधारी लाल : क्या वो अब घर के फ़ैसले भी करने लगा है? उतना बड़ा हो गया है? अब मुझे ही कुछ करना होगा। तुम रोहित को ज़रा मेरे पास भेजो!

लक्ष्मी देवी: जी मैं भेजती हूँ।

## दूसरा दृश्य

(रोहित ड्राइंगरुम में आता है)

गिरधारी लाल : आओ रोहित बेटे, ये मैं क्या सुन रहा हूँ? तुमने हिन्दी का अख़बार क्यों बन्द किया।

रोहित : पापा, आजकल हिन्दी का रिवाज़ ख़त्म होता जा रहा है ज़्यादातर लोग अंग्रेज़ी ही बोलते और पढ़ते हैं वही लोग क़ाबिल और सभ्य कहलाते हैं।

गिरधारी लाल : हिन्दी का रिवाज़ ख़त्म नहीं हुआ है मेरे बेटे, बल्कि तुम्हारे जैसे लोगों की सोच ही हिन्दी को ख़त्म करने पर आमादा है और हाँ ये याद रखना मैं कभी अपनी मातृभाषा की तौहीन बर्दाश्त नहीं करूंगा। समझे!

रोहित : पापा आप मेरी बात का बुरा मान गये? आप मेरी बात नहीं समझे पापा। आजकल सरकार के सभी दफ़्तरों में अंग्रेज़ी में ही काम होता है।

गिरधारी लाल : बेटे! तुम्हारी सब बातें मेरी समझ में आती हैं। मैंने ये बाल धूप में सफ़ेद नहीं किए हैं। मैं मानता हूँ हमारे मुल्क में बाहर की प्राइवेट कम्पनियाँ मौजूद हैं। उनका ज़्यादातर काम अंग्रेज़ी में ही हुआ करता है। यक़ीनन बेटे अपने देश की भाषा का इस्तेमाल भी तो ज़रूरी है। कल ही मैंने तुमसे साठ रुपये की कोई चीज़ मंगवायी थी और तुमने पलटकर मुझसे पूछा था कि पापा साठ रुपये कितने होते हैं? फिर मैंने तुम्हारी भाषा यानी अंग्रेज़ी में ही जवाब दिया था।

रोहित : जी पापा, आप ठीक कह रहे हैं पर मुझे हिन्दी कहाँ आती है!

गिरधारी लाल : बेटे अपनी ज़बान को इज़्ज़त देना सीखो। मैं पिछले साल बैंकॉक गया था। मुझे बैंकॉक में कुछ सामान ख़रीदना था। मैंने अपनी ज़बान हिन्दी में, फिर अंग्रेज़ी में भी बोला। लेकिन वहाँ के लोग मेरी ज़बान समझ नहीं पाये। फिर किसी ने मुझसे कहा ये अपनी ज़बान के अलावा बहुत कम कोई और ज़बान समझ पाते हैं। वो हिन्दुस्तानी था उसने थाई ज़बान बोलकर मेरी मदद की। बेटे ज़बान कोई भी बुरी नहीं होती है। हमें हर वो ज़बान सीखनी होगी जो हमारे लिए ज़रूरी हो। मैं मानता हूँ, आजकल अंग्रेज़ी सारी दुनिया में बोली और समझी जाती है इसका सीखना भी ज़रूरी है।

रोहित : जी पापा मैं आपकी बातों पर अमल करूंगा और अपने देश की भाषा का समान करूंगा और आज ही से हिन्दी भाषा सीखना प्रारम्भ भी करूंगा अब कभी आपको शिकायत का मौक़ा नहीं दूंगा। कल से घर में अंग्रेज़ी के साथ हिन्दी अख़बार भी आएगा।

गिरधारी लाल : बेटे तुम्हारी बात सुनकर मैं भी भावुक हो गया हूँ। कल तुम्हारे चाचा बनवारी लाल का यू.एस.ए. से फ़ोन आया था तुम्हारी नौकरी को लेकर वो बहुत चिन्तित हैं। कह रहे थे कि अगर तुम चाहो तो रोहित को अमरीका भेज दो। यहाँ मेरे ऑफ़िस में इसके लिए एक पोस्ट है। फिर उसने मुझसे कहा, भाई आपको ये जानकर बहुत प्रसन्नता होगी। यहाँ मेरे ऑफ़िस में जितने भी मेरे सहकर्मी हैं, सभी हिन्दी में काम करते हैं। हम सब इंडियन लोग अमरीका में अपने बच्चों को हिन्दी की शिक्षा भी दे रहे हैं। हम सब अपनी इंडियन भाषाओं साथ लेकर चल रहे हैं। अब यहाँ वाशिंगटन से हिन्दी के छः-सात अख़बार भी निकल रहे हैं।

रोहित : पापा बनवारी अंकल अमरीका में रहकर हमारी भाषा हिन्दी के लिए जो काम कर रहे हैं वो सराहनीय है।

गिरधारी लाल : हाँ रोहित बेटे, आख़िर भाई किसका है!

रोहित : पापा मुझे अपने अंकल बनवारी लाल जी पर गर्व है ईश्वर उनकी रक्षा करे। उनके सारे सपने साकार हों!

गिरधारी लाल : हाँ बेटे, हमें अपने लोगों को अपनी दुआओं में हमेशा शामिल करना चाहिए और उनके कामों की हमेशा सराहना करनी चाहिये।

रोहित : पापा हमें अपने देश में हिन्दी के उत्थान के लिए किस क़िस्म के कार्य करने चाहियें!

गिरधारी लाल : हमारा देश इस सिलसिले में अपनी हिन्दी भाषा के लिए जागरूक है, वो आए दिन सरकारी दफ़्तरों में ये निर्देश जारी करता है कि हमें अपना काम हिन्दी भाषा में ही करना चाहिए। उसके लिए सितम्बर माह में हिन्दी पर्व भी मनाया जाता है सरकार तो अपना फ़र्ज़ निभाती है।

रोहित : फिर भी लोग अपने बच्चों को हिन्दी की शिक्षा क्यों नहीं दिलवाते? जबकि सरकार हिन्दी के लिए इतना कुछ कर रही है।

गिरधारी लाल : ठीक कहा रोहित तुमने। इसके दो कारण हैं एक तो अभिभावक अपने बच्चों को अंग्रेज़ी बोलते हुए देखना चाहते हैं और इसीलिए अपने बच्चों को कॉन्वेंट स्कूलों में पढ़ाते हैं। दूसरा कारण हमारी सरकार ने हमारी हिन्दी भाषा को सही तौर पर रोज़ी-रोटी से नहीं जोड़ा है। अभी हमारे वो बच्चे जो हिन्दी में उच्च शिक्षा प्राप्त कर नौकरी के लिए निकलते हैं। उनसे इंटरव्यूज़ अंग्रेज़ी ज़बान में लिए जाते हैं और वो असफल हो जाते हैं।

रोहित : पापा अपने देश में इस तरह का भेदभाव क्यों होता है ?

गिरधारी लाल शर्मा : हमारे बड़े दफ़्तरों और सरकारी संस्थाओं में वो लोग हम पर मुसल्लत हैं, जो अंग्रेज़ी को ही अपना सब कुछ समझ बैठे हैं। वो नहीं चाहते कि उनका स्थान कोई हिन्दी वाला ले। हमें इन बड़े स्थानों पर उन लोगों को लाना होगा जो हिन्दी की उच्च शिक्षा प्राप्त किए हों और उन्हें अंग्रेज़ी का भी अच्छा ज्ञान हो। तभी हम अपनी हिन्दी भाषा की भी रक्षा कर सकेंगे और कॉन्वेंट स्कूलों में अंग्रेज़ी के साथ हिन्दी की शिक्षा को भी अनिवार्य करना होगा तभी हमारे मुल्क की तस्वीर बदलेगी।

रोहित : पापा मैं भी आज से प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपनी भाषा हिन्दी के लिए हर वो काम करूंगा, जिससे हमारी हिन्दी को बढ़ावा मिले।

गिरधारी लाल : शाबाश बेटे, मुझे तुमसे यही उम्मीद है। इस नयी जनरेशन को तुम ही जैसे हौसलेमंद होनहार बच्चों की आवश्कता है। तुम ही इन नौजवानों को हिन्दी के प्रति आकृष्ट कर सकते हो।

रोहित : पापा अपनी हिन्दी भाषा का रूप निखारने के लिए और किस तरह के सुधार करने होंगे ?

गिरधारी लाल: हम सब लोग एक साथ मिलकर ऊँचे स्वर में कहें हम अपनी हिन्दी भाषा के प्रचार व प्रसार में बढ़-चढ़कर भाग लेंगे। आज के बाद अपना हर कार्य हिन्दी में करेंगे। तभी हम क़ामयाबी की तरफ़ अग्रसर हो सकेंगे।

पॉपुलर मेरठी

बातचीत करना सदा, हिन्दी में आसान।
उच्चारण जैसा लिखें, वैसा ही श्रीमान॥

शरद तैलंग

# आगे समाचार यह है कि...

**कोरोना काल की पाबन्दियों ने उत्सवों को सर्वाधिक प्रभावित किया है। तालियाँ, ठहाके, महोत्सव, उत्साह और मनोरंजन जैसे तत्व लगभग लुप्त हो गये हैं। इंटरनेट पर ऑनलाइन कार्यक्रमों ने इन तत्वों की स्मृतियों को जीवित रखने में मदद ज़रूर की, लेकिन वह ऊँट के मुँह में जीरा ही साबित हो सकी। गत माह, जब देश स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहा था, तब यकायक उत्सवों ने अंगड़ाई अवश्य ली। टेलीविज़न चैनल्स पर आज़ादी के अवसर पर कवि-सम्मेलनों की शूटिंग शुरू हो गयी। गली-मुहल्ले से लेकर प्रदेश तथा देश के स्तर पर कवि-सम्मेलनों की बाढ़ सी आ गयी। इसी दौरान रामायण कवि-सम्मेलनों तथा श्री राम काव्यपाठ जैसे कार्यक्रमों ने भी उत्सवों में नए प्राण फूँकने में सहायता की।**

**इस माहौल को देखते हुए हम एक बार फिर कवि-सम्मेलन समाचार स्तंभ का प्रारंभ कर रहे हैं। हमें विश्वास है कि भारत जैसे उत्सवधर्मी देश में अबकी बार हमें यह स्तम्भ स्थगित नहीं करना पड़ेगा। आपके क्षेत्र में कहीं कोई कवि-सम्मेलन या कविता से सम्बन्धित कोई गतिविधि हो तो हमें उसकी रिपोर्ट अवश्य भेजें ताकि हम दुनिया को बता सकें कि कविता का यह परिवार कितना सक्रिय तथा कितना वृहद है।**

**7 अगस्त, बिलासपुर।** श्री अशरफ़ी लाल सोनी के हाव्य-व्यंग्य संग्रह 'सोनी की अशर्फियाँ' के लोकार्पण समारोह के अवसर पर होटल सेंट्रल प्वाइंट में हास्य कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री अरुण जैमिनी, डॉ. सुरेन्द्र दुबे, मुमताज़ नसीम तथा राजेन्द्र मौर्य ने काव्यपाठ किया।

**13 अगस्त, मेरठ।** अमर उजाला की ओर से स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर 'माँ तुझे प्रणाम' शीर्षक से चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के नेताजी सुभाष चंद्र बोस प्रेक्षागृह में कवि सम्मेलन एवम् मुशायरा आयोजित किया गया जिसमें सर्वश्री डॉ. हरिओम पँवार, डॉ. सुनील जोगी, विनीत चौहान, सुदीप भोला, मुमताज़ नसीम तथा सुमनेश सुमन ने काव्यपाठ किया।

**14 अगस्त, मेरठ।** लाला लाजपत राय स्मारक मेडिकल कॉलेज की ओर से 'स्वतन्त्रोत्सव' शीर्षक से अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री अरुण जैमिनी, अनामिका अम्बर, सौरभ सुमन, विमन ग्रोवर, अरुण पाण्डेय तथा अनुज मलिक ने काव्यपाठ किया।

**14 अगस्त, पटियाला।** स्वतंत्रता दिवस की पूर्वसंध्या पर वर्द्धमान महावीर जनहित रसोई में राष्ट्रीय कवि-सम्मेलन का अयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री दिनेश घेवरिया, सुन्दर कटारिया, संजीव मुकेश, प्रियंका रॉय तथा प्रतीक गुप्ता ने काव्यपाठ किया।

**16 अगस्त, ग़ाज़ियाबाद।** जिला प्रशासन तथा हिन्दी भवन समिति द्वारा पर दिनेश चंद गर्ग प्रेक्षागृह, हिन्दी भवन में कवि सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें सर्वश्री अरुण जैमिनी, डॉ. विष्णु सक्सेना, डॉ. प्रवीण शुक्ल, डॉ. कीर्ति काले, राज कौशिक तथा डॉ. अर्जुन सिसोदिया ने काव्यपाठ किया।

**27 अगस्त, नोएडा।** जयश्री श्याम फार्मेसी के शुभारम्भ के अवसर पर सेक्टर 50 के महाराणा प्रताप सभागार में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री अनामिका अम्बर, कुशल कुशवाहा, अनामिका वालिया, वाशु पाण्डेय तथा अमित शर्मा ने काव्यपाठ किया।

**29 अगस्त, इन्दौर।** अभिनव कला समाज की ओर से गान्धी हॉल में आगमन शीर्षक से अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का अयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री शशिकान्त यादव, शम्भू शिखर, डॉ. राजीव राज, अमर अक्षर, अभय निर्भीक, पंकज दीक्षित, मणिका दुबे तथा महेन्द्र सिंह पँवार ने काव्यपाठ किया।

# इन्तज़ार ख़त्म हुआ

कचपन
किलकारी कविता की

**कचपन** एक ऐसा स्वप्न है, जिसे साकार होते देखकर सबसे ज़्यादा ख़ुशी मुझे हो रही है। यद्यपि इस प्रतियोगिता की घोषणा के तुरन्त बाद मुझे स्वास्थ्य कारणों से अस्पताल में भरती होना पड़ा तथा कविग्राम की पूरी टीम भी अस्पताल की भागदौड़ के चलते इस प्रतियोगिता के दौरान वैसे सक्रिय न रह सकी, जैसा हमने सोचा था। इसके बावजूद देश-विदेश से आई सैंकड़ों प्रविष्टियों को सहेजकर प्रतियोगिता को लगभग नियत समय पर ही प्रारम्भ करने में प्रवीन अग्रहरि तथा मनीषा शुक्ला ने जो लगन दिखाई है उसके लिए उनको साधुवाद देता हूँ। इन आपात परिस्थितियों को अंगूठा दिखाकर भी प्रतियोगिता को जीवित रखने के हठयोग की साधना में यदि कोई त्रुटि रह गयी हो, किसी प्रविष्टि को सहेजने में चूक हो गयी हो, तो उसके लिये मैं अग्रिम रूपेण क्षमायाचना करता हूँ तथा आश्वस्त करता हूँ कि कचपन के दूसरे सत्र में इन त्रुटियों को सुधारने पर हमारा पूरा बल रहेगा।

चूँकि इंटरनेट पर अनेक कविताएँ अन्यान्य कवियों के नाम से घूम रही हैं, इसलिये कवि का नाम न बताने पर अथवा कवि का नाम ग़लत बताने पर हमने प्रविष्टि को रद्द नहीं किया है। बल्कि वीडियो के विवरण में तथा थम्बनेल में कवि का नाम सही करके प्रकाशित करने का प्रयास किया है, तथापि कहीं कोई चूक रह गयी हो तो कृपया हमें इसकी सूचना दें ताकि उसमें सुधार किया जा सके।

तीनों वर्गों में कुल मिलाकर हमें लगभग 300 ऐसे वीडियो प्राप्त हो सके हैं, जो प्रतियोगिता में सम्मिलित किये जा सके हैं। इस ख़ज़ाने में बालपन, लड़कपन तथा कैशोर्य को काव्य की गंगा से एकाकाकर होते देखकर मन प्रफुल्लित हो उठा है। मैंने कभी यह

सपना देखा था कि तुतलाहट की देहरी तक रश्मिरथी जैसे ग्रंथों का प्रसार करने के लिए कुछ उपक्रम करूंगा। यह सपना कचपन ने पूरा कर दिया। यदि इन प्रविष्टियों का प्रमाण स्वीकार हो तो सर्वश्री सोहनलाल द्विवेदी, रामधारी सिंह दिनकर, हरिवंशराय बच्चन तथा सुभद्राकुमारी चौहान सर्वाधिक लोकप्रिय रचनाकार हैं। 'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती' कविता को तो इतने बच्चों ने पढ़ा है कि हमारे एडिटरों ने इस रचना के थम्बनेल को वॉलपेपर बनाकर रख लिया था।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि अज्ञेय सरीखे गूढ़ कवि को भी छोटे-छोटे बच्चों ने अपनी वीडियो का हिस्सा बनाया है। कचपन का परिणाम क्या होगा, कौन विजयी होगा, किसे पुरस्कार मिलेगा —यह सब मैं नहीं जानता, लेकिन मैं इतना अवश्य जानता हूँ कि दो वर्ष से भी कम अवधि में कचपन के माध्यम से कविग्राम ने अगली पीढ़ी में वे बीज बो दिये हैं जिनसे भविष्य के मानस पर काव्य की फसल लहलहाती हुई दिखाई देगी।

कविग्राम टीम ने 'कचपन' का काम पूरा कर लिया है। दिन-रात एक करके लगभग तीन सौ वीडियो एडिट की हैं। अब यह मशाल आपके हाथ में है। इन नन्हें-नन्हें बच्चों के वीडियो को देखें, लाइक करें तथा प्रचारित करें। सोशल मीडिया पर अनर्गल सामग्री देखकर अपना समय तथा संस्कृति नष्ट करने की बजाय यदि आपने इन सीधे-सादे काव्य-रत्नों को प्रसारित करने में हमारा सहयोग किया तो भविष्य के गर्भ में पनप रही काव्य-संस्कृति की क्यारियों का कुछ मकरंद आप तक भी अवश्य पहुँचेगा।

तो विलम्ब न कीजिये। नीचे दिये जा रहे आइकॉन्स को स्पर्श कीजिये और प्रवेश कीजिये, कविता की सबसे ताज़ा बगिया में। जो वीडियो अच्छा लगे, उसका लिंक अपने मित्रों से भी शेयर कीजिये। ...करके देखिये। अच्छा लगेगा।

चिराग़ जैन

# विनम्र श्रद्धांजलि

**श्री प्रकाश प्रलय**

जन्म : 18 जनवरी 1952
निधन : 27 अगस्त 2021

**दीया के**
**श्रेष्ठ चिन्तन को**
**सार्थक करेंगे**
**हम मिट्टी के हैं**
**मिट्टी में मिलेंगे**
**मग़र जब तक हैं**
**रोशनी करते रहेंगे**

पत्रिका खोलने के
लिए क्लिक करें

देश की पहली
साहित्यिक ई-पत्रिका
जो पढ़ी और सुनी
भी जा सकती है
तथा जिसमें संगीत के
लिंक्स भी है जिनसे
निर्मल आनंद
उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से
आपका सन्देश स्वचालित
रूप से पहुँच जायेगा और
नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका
मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

यदि आप किसी कारण से चिह्न द्वारा संदेश
नहीं भेज पाए तो निम्न मोबाइल नम्बर के
वाट्सऐप द्वारा अपना संदेश भेजें।

**8610502230** (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

## — कुछ आवश्यक सूचनाएँ —

कविग्राम पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया का कोई आईकॉन बना दिखे वह एक **सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म लिंक** है। उसे स्पर्श करने पर आप उस पृष्ठ से सम्बद्ध इंटरनेट पेज पर पहुँच जाएंगे।

कविग्राम के व्हाट्सएप नम्बर से हर महीने के अन्त तक नया अंक प्रेषित कर दिया जाता है। यदि किसी तकनीकी कारणवश **आपको नया अंक न मिले तो** कृपया हमें इसकी सूचना दें अथवा हमारी वेबसाइट **KAVIGRAM.COM/PATRIKA** से डाउनलोड कर लें।

**यदि आप लेखक हैं तो** अपनी रचना केवल कविग्राम की ईमेल पर भेजें। व्हाट्सएप पर प्रेषित की गयी रचना स्वीकार नहीं की जायेगी। पद्य का विषय कुछ भी हो सकता है किन्तु गद्य केवल कवि-सम्मेलन, कवि-जीवन तथा काव्य के इर्द-गिर्द ही स्वीकार किया जायेगा। रचना प्रकाशित न होने पर सम्पादक मण्डल उसके अस्वीकार किये जाने का कारण बताने के लिये बाध्य नहीं होगा।

# कविग्राम

**कविग्राम के पिछले अंक पढ़ने के लिये अंक को स्पर्श करें**

**'कविग्राम'** सम्पूर्ण कवि-सम्मेलन जगत् का एक समृद्ध मंच है, जो कवि-सम्मेलन सम्बन्धी समस्त गतिविधियों के संचालन में अनवरत कर्मरत हैं। कविग्राम से जुड़ें तथा समान अभिरुचि के मित्रों को इस मंच से जोड़ें।